AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Political Sience

राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण – भारतीय ग्रामीण महिलाओं का एक अध्ययन

नीरज कुमार ठाकुर, डॉ. विनोद कुमार सैनी

[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

[2]शोध निर्देशक, राजनीति विज्ञान, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER.IFANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BELEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE .FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, ISHALL BELEGALLY RESPONSIBLE (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

सारांश

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण पर सुपौल जिले के उपखंड की ग्रामीण महिलाओं की धारणा का अध्ययन करना था। यह अध्ययन भारत के सुपौल जिले के उप–मंडल में आयोजित किया गया था। गुणात्मक अध्ययन प्रकृति में घटनात्मक है। नमूना उद्देश्यपूर्ण था और अध्ययन क्षेत्र से ग्रामीण महिलाओं के अर्ध संरचित साक्षात्कार के माध्यम से गुणात्मक डेटा एकत्र किया गया था। पूर्व निर्धारित विषयों के अनुसार निगमनात्मक कोडिंग के बाद, डेटा का विषयगत विश्लेषण किया गया। अध्ययन में पाया गया कि राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण पर ग्रामीण महिलाओं की धारणा व्यापक रूप से विभाजित है।

मुख्य शब्दः समाज, आर्थिक, सामाजिक, राजनीति, चर्चा, भागीदारी और प्रतिनिधित्व

परिचय

महिला सशक्तिकरण एक वैश्विक मुद्दा है क्योंकि वैश्विक स्तर पर उनके पुरुष समकक्षों की तुलना में उनके पास कम अवसर हैं। जीवन के हर क्षेत्र में, चाहे वह शिक्षा हो, करियर हो, निर्णय लेने की प्रणाली हो और समाज में भी, महिलाएँ पुरुषों से बहुत पीछे हैं। अविकसित और विकासशील देशों में अंतर बहुत बड़ा है और जमीन–आसमान का अंतर है। एकमात्र साधन जो अंतर और अंतर को कम कर सकता है वह है समाज के सभी मोर्चों पर महिलाओं का सशक्तिकरण।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Political Sience

सशक्तिकरण का उपयोग आबादी के अन्य आधे हिस्से के उत्थान के लिए किया जा सकता है लेकिन महिलाओं के मामले में यह अविभाज्य है (पॉल, एट अल, 2016)। सशक्तिकरण एक बहुआयामी अवधारणा है। ऐसा तब हो सकता है जब दोनों लिंगों को उचित शिक्षा प्रदान की जाए। वे अपने परिवेश के प्रति जागरूक हो जाते हैं। शिक्षा दिमाग को व्यापक बनाती है और उन्हें दायरे से परे देखने की प्रेरणा देती है।

समाज में महिलाओं की भूमिका बहुआयामी है और समय–समय पर बदलती रहती है। प्राचीन वैदिक संस्कृति से लेकर आधुनिक सभ्यता तक महिलाओं ने प्रेरणा के साथ–साथ अभाव का भी अनुभव किया है। महिला सशक्तिकरण को मुख्य रूप से एक निश्चित स्थिति के बजाय एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए जो शक्ति की पूर्वकल्पित धारणाओं को चुनौती देती है और महिलाओं की सफलता को बढ़ावा देती है (जैन, 2023)। यह वैश्वीकृत गाँव पुरुष सदस्यों की कठिनाइयों को ध्यान में रखता है। महिलाएं आज हर क्षेत्र में मौजूद हैं, चाहे वह न्यूनतम संख्या में ही क्यों न हो, लेकिन कम से कम कुछ प्रतिबंधित क्षेत्रों में महिलाओं ने अपनी जगह हासिल करने के लिए सीमाओं को पार कर लिया है। पितृसत्तात्मक समाज ने हमेशा महिलाओं को निजी क्षेत्र में धकेला है। उनके पास अपनी आवाज की कमी है और उन्होंने इसे बिना किसी शिकायत के स्वीकार कर लिया है। वह भविष्य के नेताओं और पथप्रदर्शकों को खड़ा कर रही है लेकिन वह खुद एक अदृश्य लबादे में ढकी हुई है (एरोवोलो और अलुको, 2010)। राजनीतिक भागीदारी के दृष्टिकोण से महिलाओं में उचित ज्ञान का अभाव है। उन्हें राजनीतिक घटनाक्रम की ज्यादा जानकारी नहीं है. सरकारों ने स्थानीय स्तर पर महिलाओं के लिए 1ध्3 आरक्षण निर्धारित किया है, लेकिन वास्तव में, केवल कुछ ही इस पद पर आ पाते हैं (अन्नाकिली, 2019)। 1/3 आरक्षण योजना पुरुष प्रधान समाज का दिखावा नहीं है क्योंकि अंततः सार्वजनिक क्षेत्र में ज्यादातर पुरुष समकक्षों का वर्चस्व है।

स्वतंत्रता के बाद के युग में कई आंदोलन हुए जिनमें महिलाओं ने सक्रिय भागीदार के रूप में भाग लिया। उत्तराखंड में हुआ प्रसिद्ध चिपको आंदोलन महिलाओं को प्रकृति से जोड़ने और उनके द्वारा प्रदर्शित नेतृत्व गुणों को सामने लाया (बंदोपाध्याय, 1999)। राजनीतिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी न केवल समाज के विकास के लिए बल्कि स्वयं महिलाओं के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण और आवश्यक मानी जाती है। दुनिया तभी प्रगति करेगी जब महिलाएं अलग–अलग क्षेत्रों में काम करेंगी और महिला सदस्यों की कठिनाइयों को पहचाना जाएगा। राजनीतिक भागीदारी एक ऐसा क्षेत्र है (माल एट अल, 2014)।

उचित शिक्षा का अभाव महिला सशक्तीकरण की दिशा में एक बाधा के रूप में खड़ा है (परवीन और सरकार, 2021)। स्वयं सहायता समूह और उद्यमी नौकरियों की शुरुआत के साथ महिलाएं छोटे पैमाने पर नौकरियों में संलग्न होने के कारण आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो गई हैं। हाथ में पैसा होने से महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त हो गई हैं और वे अपनी पसंद के बारे में खुद बता सकती हैं (माल एट अल, 2014)। केवल आर्थिक रूप से सशक्त बनना ही

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Political Sience

पर्याप्त नहीं है, राजनीतिक सशक्तिकरण भी बहुत जरूरी है ताकि महिला नेता आगे आएं और वे अपनी पसंद चुनें जो अन्य महिलाओं के लिए मददगार हो (परवीन और सरकार, 2021)।

साहित्य की समीक्षा

महापात्रा (2017) ने समकालीन ओडिशा के जनजातीय समुदायों में महिलाओं के आर्थिक और राजनीतिक सशक्तिकरण पर शोध किया। शोध का पहला महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि आदिवासी महिलाएं पुरुषों के बराबर महसूस करती हैं। आदिवासी महिलाएं अपना जीवन साथी चुनने के लिए स्वतंत्र हैं और सभी कृषि गतिविधियों में सक्रिय हैं, बचत और ऋण तक पहुंच रखती हैं, आय भूमि और व्यवसाय पर नियंत्रण रखती हैं। राजनीतिक सशक्तिकरण के मामले में पितृसत्ता मौजूद है। 1992 के पंचायती राज अधिनियम के लागू होने से महिलाओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इस प्रकार, आदिवासी महिलाएँ आर्थिक और राजनीतिक रूप से सशक्त हैं।

नाइक (2017) ने भारत में राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण पर एक अध्ययन किया था। स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के बाद महिलाओं की स्थिति का संवैधानिक प्रावधान और लोकसभा और राज्यसभा में महिलाओं की स्थिति के साथ अध्ययन किया जाता है। पेपर बताता है कि पंचायत स्तर पर महिलाओं का बेहतर प्रतिनिधित्व है जो लोकसभा और राज्यसभा में अभी तक नहीं हुआ है। आरक्षण व्यवस्था के कारण स्थानीय स्तर की राजनीति में महिलाएँ अधिक दिखाई देती हैं। ग्रामीण स्तर पर राजनीति में अधिक महिलाएँ भाग लेती देखी जाती हैं लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर यह आँकड़ा संतोषजनक नहीं है।

शोध प्रश्न

- अपने सशक्तिकरण के लिए राजनीतिक भागीदारी वाली महिलाओं के प्रति ग्रामीण महिलाओं की क्या धारणा है?
- वे सक्रिय राजनीति में भाग लेना चाहते हैं या नहीं?
- क्या परिवार के पुरुष सदस्य उनकी राजनीतिक भागीदारी का समर्थन करेंगे?
- यदि वे सक्रिय राजनीति में शामिल होते हैं तो उन्हें क्या चुनौतियाँ महसूस होती हैं?

अध्ययन के उद्देश्य

- ग्रामीण महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के प्रति धारणा का अध्ययन करना।
- यह अध्ययन करना कि वे सक्रिय राजनीति में भाग लेना चाहते हैं या नहीं।
- यदि उनके परिवार का मुखिया अनुमति देता है तो अध्ययन करें और उनकी भागीदारी का समर्थन करें।
- सक्रिय राजनीति में शामिल होने पर ग्रामीण महिलाओं को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, इसका अध्ययन करना।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Political Sience

क्रियाविधि

शोध का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी, उनके सामने आने वाली चुनौतियों और राजनीति में उनकी भागीदारी के माध्यम से होने वाले समग्र सशक्तिकरण का अध्ययन करना है। इसलिए, वर्तमान अध्ययन गुणात्मक अध्ययन और घटनात्मक प्रकृति का है। अध्ययन क्षेत्र सुपौल जिले के उपखंड के अंतर्गत था और कुल मिलाकर 21 उद्देश्यपूर्ण नमूने सुपौल जिले के उपखंड में पंचायत क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले गांवों से लिए गए थे। उद्देश्यपूर्ण मानदंड का नमूना अध्ययन क्षेत्र की उन ग्रामीण महिलाओं से लिया गया था जिनकी उम्र 18 वर्ष से अधिक थी और जिन्होंने कम से कम 12वीं कक्षा उत्तीर्ण की हो। उत्तरदाताओं के घरों पर जाकर साक्षात्कार लिए गए। सत्र शुरू करने से पहले परिवार के मुखिया से उचित अनुमति ली गई थी।

अध्ययन के लिए, एक अर्ध संरचित ओपन एंडेड साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया था। अर्ध–संरचित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया था ताकि साक्षात्कारकर्ता अपनी इच्छानुसार आवश्यक प्रश्न पूछ सके, साथ ही साक्षात्कारकर्ता अपनी आंतरिक भावनाओं को साझा कर सके और बिना किसी प्रतिबंध के अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सके और साक्षात्कार अनुसूची की संरचना से बंधा न हो। साक्षात्कार के दौरान, परिवार के सदस्यों या अभिभावकों को उपस्थित होने की अनुमति नहीं थी ताकि साक्षात्कारकर्ता खुलकर बात कर सके। आमने–सामने साक्षात्कार आयोजित किया गया और ऑडियो रिकॉर्ड किया गया जिसे बाद में लिखित रूप दिया गया। सत्र का समय दोपहर से शुरू हुआ क्योंकि यही वह समय था जब महिलाएं अपने घरेलू कामों से मुक्त होती थीं। संग्रह के बाद, डेटा का चार विषयों के तहत विषयगत विश्लेषण किया गयाः चूंकि विषय पहले से ही अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार निर्धारित किए गए थे, डेटा को चार विषयों के तहत निगमनात्मक रूप से कोडित किया गया था।

परिणाम और चर्चा

उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय प्रोफाइल

आयु, शैक्षिक योग्यता और व्यवसाय के संदर्भ में जनसांख्यिकीय जानकारी सारणीबद्ध और नीचे दी गई है –

तालिका 1.1: आयु के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

उत्तरदाताओं की आयु	उत्तरदाताओं की संख्या
39-45	3
32-38	4
25-31	7
18-24	7
कुल	**21**

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Political Sience

उपरोक्त तालिका 1.1 उत्तरदाताओं की आयु दर्शाती है। 7 महिलाएं 18 से 24 आयु वर्ग की हैं, अन्य 7 25 से 31 आयु वर्ग की हैं। चार महिलाएं 32 से 38 आयु वर्ग की हैं जबकि 3 महिलाएं 39 से 45 आयु वर्ग की हैं। तालिका से पता चलता है कि उत्तरदाताओं की आयु 18 से 45 वर्ष के बीच थी।

तालिका 1.2: शैक्षिक योग्यता के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

शैक्षणिक योग्यता	उत्तरदाताओं की संख्या
उच्चतर माध्यमिक (एच.एस.)	7
स्नातक	12
मास्टर्स	2
कुल	**21**

उपरोक्त तालिका 1.2 महिला उत्तरदाताओं के शैक्षिक स्तर को दर्शाती है। एच.एस. की श्रेणी के अंतर्गत 7 उत्तरदाता हैं, स्नातक के अंतर्गत 12 महिलाएँ हैं और परास्नातक के अंतर्गत 2 महिला उत्तरदाता हैं। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं की शैक्षणिक योग्यता स्नातक स्तर पर केन्द्रित है।

तालिका 1.3: व्यवसाय के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

व्यवसाय	उत्तरदाताओं की संख्या
गृहिणी	14
क्रार्य	3
राजनीतिक व्यस्तता	3
कुल	21

उपरोक्त तालिका 1.3 में व्यवसाय के आधार पर वितरण किया गया है। 21 उत्तरदाताओं में से 14 गृहिणी हैं, 3 उत्तरदाता अपनी नौकरी के लिए घर से बाहर जाते हैं और 3 उत्तरदाता सक्रिय राजनीति में लगे हुए हैं। तो, वितरण तालिका से पता चलता है कि अधिकांश उत्तरदाता गृहिणी हैं।

चर्चा

प्रथम विषय के अंतर्गत ग्रामीण महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के प्रति धारणा का अध्ययन किया गया। अर्ध संरचित खुले साक्षात्कारों के माध्यम से एकत्र किए गए आंकड़ों से यह पाया गया कि 47 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं का मानना है कि महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए राजनीति में सबसे आगे आना चाहिए। उनका मानना है कि राजनीतिक मंच महिलाओं को सशक्त बनाने और महिलाओं और उनके पुरुष समकक्षों के बीच सामाजिक अंतर को कम करने का एक साधन है। यदि महिलाएं राजनीति में आती हैं, तो वे अपनी आवाज उठा सकती हैं,

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Political Sience

और महिलाओं के लिए नीति निर्धारण निर्णय में भी भाग ले सकती हैं। हालाँकि, साथ ही 29 प्रतिशत (10 उत्तरदाता) राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को नकारात्मक रूप से देखते हैं और उनका मानना है कि राजनीतिक मामले केवल पुरुषों के लिए हैं और महिलाओं को सक्रिय राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए। इसके अलावा, 24 प्रतिशत (5 उत्तरदाताओं) ने कहा कि उन्हें पता नहीं है कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी महिलाओं को सशक्त बनाएगी या नहीं, यह उनमें राजनीतिक और सामाजिक जागरूकता की कमी को प्रदर्शित करता है। हालाँकि अधिकांश महिलाओं की यह सकारात्मक धारणा है कि राजनीति में महिलाओं की भागीदारी उन्हें सशक्त बनाएगी, फिर भी इस विषय पर महिलाओं की राय व्यापक रूप से विभाजित है। शोधकर्ताओं ने जांच की कि क्या उत्तरदाता महिलाएं अवसर मिलने पर सक्रिय राजनीति में भाग लेना चाहती हैं, 67 प्रतिशत उत्तरदाताओं (कुल 21 में से 14) ने अवसर मिलने पर सक्रिय राजनीति में भाग लेने की इच्छा जताई। यहां शोधकर्ताओं ने देखा कि ऊपर अध्ययन किए गए पहले विषय में जहां 47 प्रतिशत उत्तरदाता महिलाओं ने राय दी कि महिलाओं को महिला सशक्तिकरण के लिए सक्रिय राजनीति में भाग लेना चाहिए और 24 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने व्यक्त किया कि राजनीतिक पर उनकी अपनी कोई राय नहीं है। भागीदारी और महिला सशक्तिकरण। जब उनसे राजनीति में उनकी स्व–भागीदारी के बारे में पूछा गया, तो 67 प्रतिशत ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी, जिसका अर्थ था कि उन उत्तरदाताओं को इस बात की जानकारी नहीं है कि क्या राजनीतिक भागीदारी महिलाओं को सशक्त बनाएगी, वे सक्रिय राजनीति में भी भाग लेने के इच्छुक हैं। हालाँकि, जब उनसे पूछा गया कि क्या वह राजनीति में सक्रिय भागीदारी चाहती हैं तो 33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी। अध्ययन में यह अध्ययन किया गया कि क्या परिवार के पुरुष सदस्य उत्तरदाताओं को सक्रिय राजनीति में भाग लेने की अनुमति देंगे। शोधकर्ताओं ने पाया कि 86 प्रतिशत उत्तरदाताओं (कुल 21 में से 18) ने सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए बताया कि गांव के पुरुष भी अपनी महिला समकक्षों को सक्रिय राजनीति में शामिल करने में रुचि रखते हैं और वे परिवार की महिला सदस्यों को सक्रिय राजनीति में शामिल होने की अनुमति देने में उदार हैं। राजनीतिक मामलों में सक्रिय। जब चौथे विषय के तहत अध्ययन किया गया कि ग्रामीण महिलाएं राजनीतिक रूप से सक्रिय होने पर अपने सामने आने वाली चुनौतियों को किस तरह से महसूस करती हैं, तो भारतीय समाज में महिलाओं की सबसे आम चुनौती घर के काम को पूरा करना है, खासकर ग्रामीण समाज में घरेलू काम करना। और बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी पूरी तरह से परिवार की महिला सदस्यों की है। इसके अलावा, महिलाओं ने इसे एक जन प्रतिनिधि के रूप में अचानक आने वाली कॉल में शामिल होने को एक चुनौती के रूप में भी व्यक्त किया, जो भारतीय ग्रामीण राजनीति में एक सामान्य घटना है। समाज के लोग चाहते हैं कि उनका राजनीतिक नेता समय–समय पर उनके पक्ष में रहे। महिलाओं के लिए अचानक घर से निकलना मुश्किल होता है, खासकर विषम समय में।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Political Sience

निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर सुपौल जिले के उपखंड की ग्रामीण महिलाओं की धारणा का अध्ययन करना था। अध्ययन में पाया गया कि राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर ग्रामीण महिलाओं की धारणाएं व्यापक रूप से विभाजित हैं। हालाँकि अधिकांश ग्रामीण महिलाओं (47 प्रतिशत) का मानना है कि महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाओं को सक्रिय राजनीति में भाग लेना चाहिए, उनमें से 29 प्रतिशत इसे नकारात्मक रूप से देखती हैं जबकि 24 प्रतिशत राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के बारे में नकारात्मक राय रखती हैं। कोई विचार नहीं है. हालाँकि, 67 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ सक्रिय राजनीति में भाग लेने की इच्छुक हैं। इसके अलावा, यदि वे सक्रिय राजनीति में हैं तो उन्हें घरेलू काम करना और बच्चों की देखभाल करना जैसी कुछ चुनौतियाँ भी महसूस होती हैं क्योंकि ग्रामीण भारत में परंपरा और संस्कृति के अनुसार ये केवल महिलाओं के काम हैं। निष्कर्ष नाइक (2017), परवीन और सरकार (2021) और एरोवोलो (2010) के अनुरूप हैं। अध्ययन की नवीनता यह है कि यह पेपर सुपौल जिले के उपखंड में ग्रामीण महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और महिला सशक्तिकरण पर उनकी धारणा और उनकी आगे की चुनौतियों पर प्रकाश डालता है। स्थानीय सरकार राजनीतिक भागीदारी में लैंगिक समानता सुनिश्चित करने, राजनीतिक मोर्चे पर महिलाओं की पहुंच सुनिश्चित करने और राजनीतिक भागीदारी के लिए महिलाओं की राह आसान करने के लिए नीतियां बना सकती है। अध्ययन केवल सुपौल जिले के उपखंड की ग्रामीण महिलाओं तक सीमित था और आगे के अध्ययन व्यापक क्षेत्रों में आयोजित किए जा सकते हैं। इसके अलावा, शहरी क्षेत्रों में उनकी राजनीतिक भागीदारी के प्रति महिलाओं की धारणा का अध्ययन करने के लिए भी शोध किया जा सकता है।

संदर्भ

[1]. नाइक, जेड.एच., (2017) भारत में राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एकेडमिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट, वॉल्यूम। 2(6), 728–731.

[2]. पांडे, जे.के., (2014) स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिला सशक्तिकरणरू एक सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य। जर्नल ऑफ कल्चर, सोसाइटी एंड डेवलपमेंट, वॉल्यूम। 4, 91–94.

[3]. परवीन, ए., सरकार, जी. (2021) राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण। क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, वॉल्यूम। 9(5), 169–173.

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Political Sience

[4]. पॉल, जी.के., सरकार, डी.सी., नाजनीन, एस. (2016) बांग्लादेश में महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति। गणित और सांख्यिकी आविष्कार के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, वॉल्यूम। 4(8), 31–38.

[5]. लोरी बीमन और (2006) रोहिणी पांडेः महिला राजनेता, लिंग पूर्वाग्रह, और ग्रामीण भारत में नीति निर्माण

[6]. बी. विसंदजी (2006) शैली अब्दुल अलीशा अप्लेः ग्रामीण भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारीः SAGE प्रकाशन wwwA u-k-sageup-com/home-nav

[7]. धारुबा हजारिका (2011)ः भारत में महिला सशक्तिकरणः एक संक्षिप्त चर्चा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन खंड 1 नंबर 3 (2011) पृष्ठ–199–2002 में प्रकाशित

[8]. तिवारी, एस. (2012)ः ग्रामीण महिलाओं में राजनीतिक चेतना Boloji-com 28.01.2012।

[9]. धर्मेंद्र कुमार दुबे (2013)ः भारतीय हिमालय में ग्रामीण महिलाओं के बीच राजनीतिक चेतनाः कुमाऊं पहाड़ियों का एक अध्ययन। मानविकी और सामाजिक विज्ञान पर शोध खंड में प्रकाशित। 3 नंबर 1 (2013)

[10]. एस. मोल पी. भट्टाचार्य (2014)ः पश्चिम बंगाल के पश्चिम मेदिनीपुर जिले में राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण। जर्नल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट एंड सोशल साइंसेज रिसर्च वॉल्यूम में प्रकाशित। 3 क्रमांक 11–2014

[11]. एरोवोलो, डी., अलुको, एफ.एस. (2010)। नाइजीरिया में महिलाएँ और राजनीतिक भागीदारी। यूरोपियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, वॉल्यूम। 14(4), 581–593.

[12]. बंद्योपाध्याय, जे. (1999)। चिपको आंदोलनः प्रचलित मिथकों और अपमानित वास्तविकताओं का। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 34(15), 880–882।

[13]. हसन एम.बी., इस्लाम, एम.एम., काजी, एम., और हुसैन, आर. (2019)। उत्तरी बांग्लादेश में स्थानीय स्तर पर महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से महिला सशक्तिकरणः कुछ चयनित संघ का एक केस स्टडी। आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, 24 (11), 1–12।

[14]. हुसैन, एस., (2015) माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से बांग्लादेश में महिला सशक्तिकरण। यूरोपियन जर्नल ऑफ बिजनेस एंड मैनेजमेंट, वॉल्यूम। 7 (17), 167–176.

[15]. काफिलत, जी.एल., (2004) नाइजीरिया में महिला सशक्तिकरण और राजनीतिक भागीदारी। जर्नल ऑफ आर्ट्स एंड सोशल साइंसेज, वॉल्यूम। 3(1), 64–71.

[16]. महापात्रा, ए., (2017) समकालीन ओडिशा के जनजातीय समुदायों में महिलाओं का आर्थिक और राजनीतिक सशक्तिकरण। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा और अनुसंधान जर्नल, वॉल्यूम। 3(5), 191–193.

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Political Sience

[17]. मल, एस., घोष, बी., भट्टाचार्य, पी., (2014) पश्चिम मेदिनीपुर जिले, पश्चिम बंगाल, भारत में राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण महिला का सशक्तिकरण, जर्नल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट एंड सोशल साइंस रिसर्च, वॉल्यूम। 3 (11), 1–4.

[18]. मुजाहिद. एन., अली, एम., नोमान, एम., बेगम, ए., (2015) महिला सशक्तिकरण के आयामः पाकिस्तान का एक केस अध्ययन। जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट, वॉल्यूम। 6(1), 37–45.

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patentor anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide(if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontanes genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/GuideName/EducationalQualification/Designation/Addressofmyuniversity/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright /Patent/Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmissions there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal

नीरज कुमार ठाकुर,
डॉ. विनोद कुमार सैनी